11-08-2022

कार्बन और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना आवश्यक

कार्यशाला को सम्बोधित करते प्रोफेसर।

कानपुर, 10 अगस्त। छात्र गतिविधि परिषद के तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में इंडियन शुगर इंण्डस्ट्री-फ्यूलिंग एनर्जी रेक्वायरमेंट विषय पर विश्व जैव ईंधन दिवस मनाया गया। डा. सीमा परोहा ने कहाकि हम इस दिन को पारंपरिक जीवाश्म ईंधन के विकल्प के रूप में गैर-जीवाश्म ईंधन के उपयोग के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए मनाते है, ताकि कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सके। उन्होंने कहाकि देश में जहां लगभग 70 फीसदी बिजली थर्मल और आटोमोबाइल ईंधन के लिए देश में क्रूड आयल के बहुत अधिक आयात पर निर्भर करता है। प्रो. डी. स्वेन ने जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने पर जोर दिया। क्योंकि वे हमेशा के लिए नहीं है और कार्बन और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना आवश्यक है। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए चीनी उद्योग द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहाकि भारतीय चीनी उद्योग इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए तैयार है। इथेनाल जो अब चीनी मांग-आपूर्ति परिदृश्य को संतुलित करने के लिए पसंदीदा विकल्प है। जोकि विदेशी मुद्रा बचाने, ऊर्जा सुरक्षा और हरित ईंधन होने के कई लाभों के कारण प्राथमिकता दी जानी चाहिये। चीनी उद्योग भविष्य में गन्ने के पौधे के अवशेषों, फिल्टर केक और अन्य कृषि अपशिष्ट से संपीड़ित बायो-गैस के उत्पादन के माध्यम से बिजली उत्पादन की गैर शोषण क्षमता का दोहन कर सकता है। खोई और गन्ना अवशेषों के माध्यम से बिजली निर्यात क्षमता 15 हजार मेगावाट या उससे भी अधिक सीमा तक हो सकती है।

गन्ने के अवशेष बन सकते हैं बिजली का स्रोत

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में विश्व जैव ईंधन दिवस पर छात्र गतिविधि परिषद के बैनर तले 'भारतीय चीनी उद्योग-ईंधन ऊर्जा की जरूरतें' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि भविष्य में गन्ने के पौधों के अवशेषों, फिल्टर केक और अन्य कृषि अपशिष्टों से बॉयो गैस का उत्पादन कर बिजली पैदा की जा सकती है। खोई से भी बिजली पैदा की जा सकती है। बॉयो केमिस्ट्री की प्रोफेसर डॉ. सीमा परोहा ने कहा कि गैर-जीवाश्म ईंधन के उपयोग के बारे में जागरुकता बढ़ाने की जरूरत है। इससे कार्बन उत्सर्जन कम किया जा सकेगा। (ब्यूरो)

Sugar industry's role in making EBP a success highlighted

PNS ■ KANPUR

Director of National Sugar Institute, Prof Narendra Mohan, addressing a seminar titled 'Indian Sugar Industry-Fueling Energy Requirements' on World Biofuel Day on Wednesday highlighted the key role played by the sugar industry to make Ethanol Blending Programme (EBP) a success. He said "Indian sugar industry was all set to play a dominant role in Ethanol Blending Programme.

He said ethanol, is now a favourite tool to balance sugar demand-supply scenario had to be preferred for its multiple advantages of saving foreign exchange, energy security and having a green fuel.

He said sugar industry in future can tap the un-exploited potential of power generation through sugarcane plant residues and production of compressed bio-gas from filter cake and other agro waste.

He said the power export potential through bagasse and sugarcane plant residues can be to the extent of 15,000 MW or even more.

He said one can expect about 2 MMT of Compressed Bio Gas (CBG) from filter cake and spent wash from molasses- based distilleries. He said this helped enable economic and environmental sustainability.

Dr Seema Paroha, Professor Biochemistry said this day was celebrated to raise awareness about the use of non-fossil fuel as an alternative to conventional fossil fuel thus to minimise carbon emissions.

She said in India where about 70 per cent of the power generation was thermal and for automobile fuel the country heavily depended upon imports and thus the subject matter assumed greater significance.

Talking about carbon emissions and green house gases, Prof D Swain stressed upon reducing dependence on fossil fuels as they were not forever and also to minimise carbon and green house gases emissions.

He said greenhouse gases trapped heat and made the planet warmer.

He said human activities were responsible for almost all the increase in greenhouse gases in the atmosphere over the last 150 years.

He said the largest source of greenhouse gas emissions from human activities was from burning fossil fuels for electricity and transportation. He said sugar industry can be an excellent source for providing clean, green and renewable energy, thus, addressing environmental and energy security issues.